

5) शुष्क मृदा → शुष्क मृदाओं का रंग किरमिशी से लेकर लाल रंग तक का होता है। ये प्रकृति से लवणीय एवं संरचना से बलुई होती है। कुछ क्षेत्रों की मिट्टियों में नमक की मात्रा इतनी अधिक होती है कि इनके पानी को वाष्पीकृत करके नमक प्राप्त किया जाता है। उच्च तापमान, शुष्क जलवायु और अत्यधिक वाष्पीकरण के कारण इन मृदाओं में नमी और ह्यूमस कम होते हैं। इनमें नाइट्रोजन की कमी और फॉस्फेट सामान्य मात्रा में होते हैं। नीचे की ओर चूने की मात्रा बढ़ने की वजह से निचले संस्तरों में कंकड़ों की परतें पाई जाती हैं। मृदा के तली संस्तर में कंकड़ों की परत के बनने के कारण पानी का रिखाव सीमित हो जाता है। अतः सिंचाई किए जाने पर इन मिट्टियों में पौधों की लगातार वृद्धि के लिए नमी सदा मौजूद रहती है। ये मृदाएँ खासकर पश्चिमी राजस्थान में अधिक विकसित हुए हैं। ये मृदाएँ अनउपजाऊ हैं क्योंकि इनमें ह्यूमस और जैव पदार्थ कम मात्रा में होते हैं।

6) लवण मृदाएँ → लवण मृदाओं में सोडियम, पोटैशियम, और मैग्नीशियम का अनुपात अधिक होता है। अतः ये अनउपजाऊ होती हैं, इनमें किसी भी प्रकार की वनस्पति नहीं उगती। ये असर मृदा भी कहलाती हैं। इस मिट्टी में लवण की मात्रा बढ़ने का कारण शुष्क जलवायु और खराब अपवाह है।

ये मृदाएँ शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती हैं।⁽²⁾ इनकी संरचना बलुई से लेकर फुमटी तक होती है। इनमें नाइट्रोजन और चूने की कमी होती है। ये मृदाएँ अधिकतर पश्चिमी गुजरात, पूर्वी तट के डेल्टाओं और पश्चिमी बंगाल के सुंदर वन क्षेत्रों में पाई जाती हैं। कच्छ के रन में 40-50 मानसून के साथ नमक के कण आते हैं, जो एक पपड़ी के रूप में ऊपरी सतह पर जमा हो जाते हैं। डेल्टा प्रदेश में समुद्री जल के भरने से लवण मृदा अधिक विकसित होती है। अत्यधिक सिंचाई वाले गहन कृषि के क्षेत्रों में, हरित क्रान्ति (विशेष रूप से) वाले क्षेत्रों में, अपजाऊ जलोढ़ मृदाएँ भी लवणीय होती जा रही हैं। शुष्क जलवायु वाली दशाओं में अत्यधिक सिंचाई से कैल्शियम क्रिया को बढ़ावा मिलता है। अतः नमक ऊपर की ओर बढ़ता जाता है एवं मृदा की सबसे ऊपरी परत में नमक जमा हो जाता है। पंजाब एवं हरियाणा में मृदा लवणता की समस्या है। मृदा की लवणता को उसमें जिप्सम डालकर कम किया जाता है।

7) पीलमय मृदाएँ → ये मिट्टियाँ उच्च आर्द्रता एवं भारी जहाँ वनस्पति की वृद्धि अच्छी है। ऐसी क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ जैव पदार्थ बड़ी मात्रा में जमा हो जाते हैं, जो मृदा को ह्यूमस और उपयुक्त मात्रा में जैव तत्व प्रदान करते हैं। इस मिट्टी में जैव पदार्थों की मात्रा 40-50% तक होती है। इनका रंग गाढ़ और काले रंग का होता है। कई स्थानों पर ये क्षारीय हैं। ये अधिकांशतः बिहार के उत्तरी भाग, पश्चिमी बंगाल के तटीय क्षेत्र, उत्तरांचल के दक्षिणी भाग, उड़ीसा और तमिलनाडु में

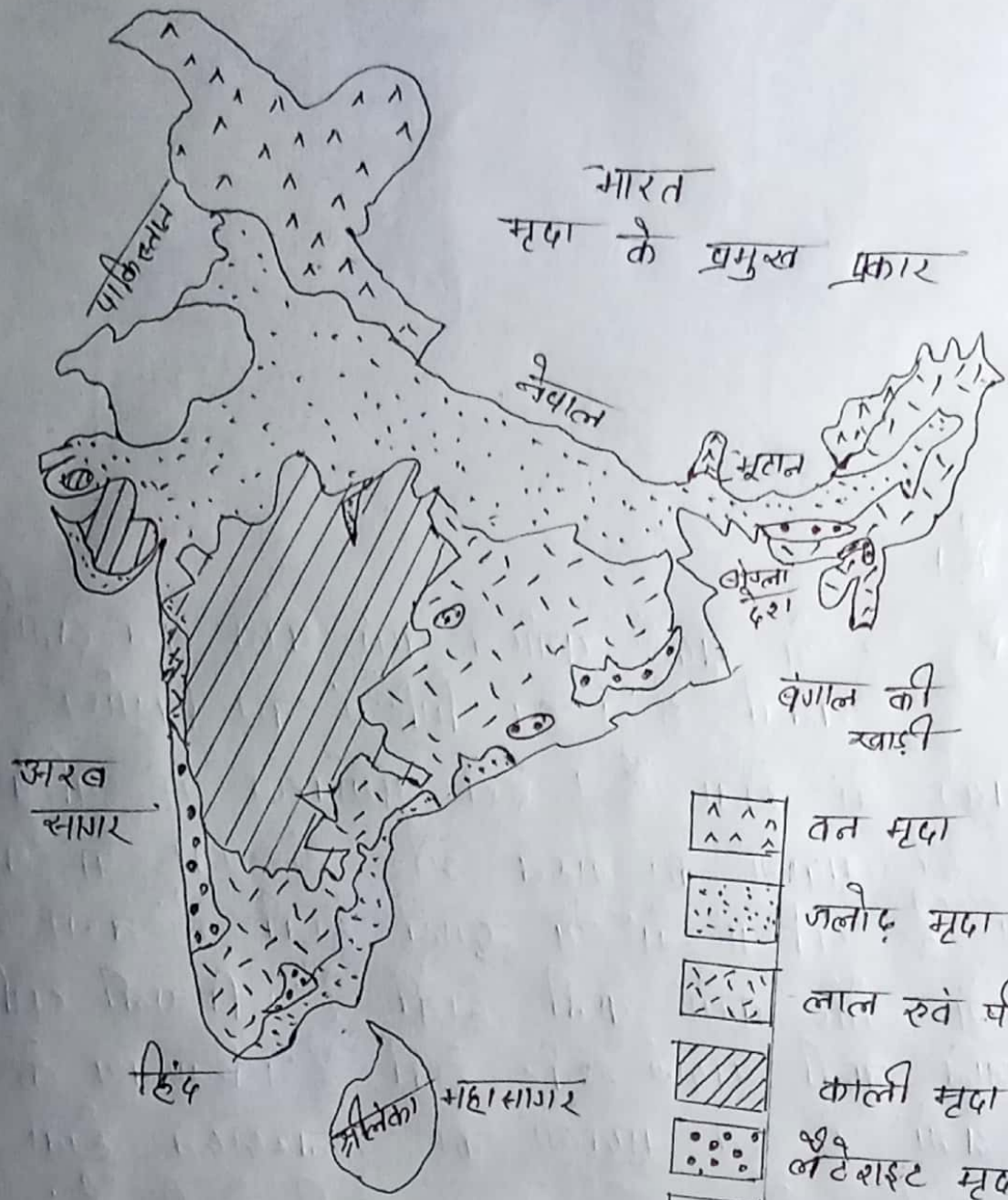
पाई जाती है।

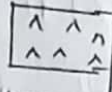




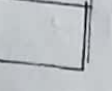
(3)

8) वन सृष्टि → ये सृष्टि पर्याप्त वर्षा वाले वन क्षेत्रों में बनती है। इन मिट्टियों का निर्माण पर्वतीय पर्यावरण में होता है। इस पर्यावरण में परिवर्तन के अनुसंधान ही सृष्टियों का गठन और संरचना में बदलाव होता रहता है। घाटियों में ये फुमटी होती है तथा ऊपरी ढलानों पर ये मोटे कणों वाली होती है। निचली घाटियों में पाई जाने वाली सृष्टि उर्वर होती है। हिमालय के हिमाच्छादित क्षेत्रों में इन सृष्टियों का अनाच्छादन होता रहता है और अम्लीय और कम सूमस वाली होती है।

मिट्टियाँ जीवित तंत्र होती हैं। मिट्टियों का गठन, गुण व प्रकृति कसलौ, पौधों और वनस्पति के अंकुरण एवं वृद्धि के लिए अति आवश्यक है। सृष्टि किसी-भी अन्य जीव की भांति विकसित, क्षय तथा निम्नीकृत होती है। सही समय पर सही उपचार के द्वारा इनमें सुधार भी आता है। सृष्टि इस तंत्र के अन्य घटकों पर गहरा प्रभाव डालती है, जिसका वे स्वयं एक अंग हैं।

भारत मृदा के प्रमुख प्रकार



-  वन मृदा
-  जलोढ़ मृदा
-  लाल एवं पीली मृदा
-  काली मृदा
-  लैटराइट मृदा
-  शुष्क मृदा